



INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 2; Issue 6; 2024; Page No. 160-164

Received: 08-08-2024

Accepted: 17-09-2024

भारतीय समाज पर वैश्वीकरण का प्रभाव

¹Kumar Abhayaditya Subham and ²Dr. Balram Singh

¹Research Scholar, P.K. University, Shivpuri, Madhya Pradesh, India

²Professor, Department of Political Science, P.K. University, Shivpuri, Madhya Pradesh, India

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.15239437>

Corresponding Author: Kumar Abhayaditya Subham

सारांश

शहरीकरण और वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप, भारतीय समाज में गहरा परिवर्तन हो रहा है। अर्थव्यवस्था की अंतर्निहित संरचना आर्थिक नीतियों से बहुत प्रभावित होती है। समाज में आय, बचत, निवेश और रोजगार के स्तर भी सरकार द्वारा बनाई और लागू की जाने वाली आर्थिक नीतियों से बहुत प्रभावित होते हैं। वैश्वीकरण अलग-अलग जगहों पर महिलाओं के अलग-अलग समूहों को अलग-अलग तरीकों से प्रभावित करता है। इस तरह की पहचान की राजनीति सिर्फ दलित और पिछड़े वर्ग के संगठनों तक ही सीमित नहीं है। अन्य प्रमुख जाति और उच्च जाति समूह भी पहचान की राजनीति का सहारा लेते हैं। वैश्वीकरण ने भारतीय समाज को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है, इसकी संस्कृति, समाज, सरकार और अर्थव्यवस्था को बदल दिया है।

मूलशब्द: भारतीय, समाज, वैश्वीकरण, अर्थव्यवस्था और भारत।

प्रस्तावना

दक्षिण एशिया के अधिकांश विकासशील 5 देशों की तरह भारत भी बहुजातीय, बहुसांस्कृतिक और बहुभाषी समाज है। भारतीय समाज जाति, वर्ग, धर्म, क्षेत्र आदि की दृष्टि से एक बहुलवादी समाज है। भारत जैसे देश में जहां जाति, धर्म, भाषा, नस्ल और समुदाय के आधार पर व्यापक विविधताएं हैं और कई तरह के सामाजिक उत्पीड़न हैं, पहचान की राजनीति उपजाऊ जमीन पाती है। भारत दुनिया के सर्वाधिक विविध समाजों में से एक है। कहा जाता है कि भारत के लोगों की सभ्यता 2500 ईसा पूर्व से निरंतर चली आ रही है। इसमें दुनिया के सभी प्रमुख धर्मों के लोग रहते हैं - हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन और पारसी। हिंदुओं की आबादी लगभग 82 प्रतिशत है, लेकिन भारत में दुनिया में मुसलमानों की दूसरी सबसे बड़ी आबादी भी है, जो अनुमानित 149 मिलियन है।

इस तरह की पहचान की राजनीति सिर्फ दलित और पिछड़े वर्ग के संगठनों तक ही सीमित नहीं है। अन्य प्रमुख जाति और उच्च जाति समूह भी पहचान की राजनीति का सहारा लेते हैं। पार्टियाँ समर्थन जुटाने और अपनी चुनावी ताकत बढ़ाने के लिए पहचान की राजनीति का इस्तेमाल करने में माहिर हैं। उदाहरण के लिए, यूपी में भाजपा, सपा और कांग्रेस जैसी सभी पार्टियाँ समर्थन जुटाने

के लिए जाति और उपजाति सम्मेलन करती हैं। वे पहचान की राजनीति को बढ़ावा देते हैं और जाति विखंडन की प्रक्रिया को मजबूत करते हैं। विखंडन की यह प्रक्रिया अनुसूचित जातियों की उप-श्रेणियों के भीतर विकसित होने वाली प्रतिस्पर्धा और संघर्षों में देखी जा सकती है। जैसे आंध्र प्रदेश में माला-मडिगा संघर्ष। दलित ईसाइयों और दलित मुसलमानों के मामले में नई पहचानों का उदय भी देखा जा सकता है। अब जबकि हमने भारत में पहचान की राजनीति के बारे में अपनी समझ को रेखांकित कर लिया है। आइए हम इस सवाल पर वापस आते हैं कि वैश्वीकरण से इस पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।

वैश्वीकरण का भारत की अर्थव्यवस्था और उपभोग के पैटर्न पर व्यापक प्रभाव पड़ा है, लेकिन भारत की पहचान और राजनीति में बदलाव के बुनियादी निर्धारक काफी हद तक घरेलू ही हैं। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वर्तमान शताब्दी में पहचान की राजनीति अंतर्राष्ट्रीय विकास से प्रभावित होती है। एक बहुलवादी या बहुसांस्कृतिक समाज में पहचान की राजनीति को कैसे समझा जाए और 21वीं सदी में भारत की पहचान की राजनीति की स्थायी विशेषताएं क्या हैं, इस पर चर्चा करना बिल्कुल उपयुक्त है।

वैश्वीकरण के कारण लोकतांत्रिक मूल्यों और विचारों का प्रसार हुआ है। इससे भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में पारदर्शिता,

जवाबदेही और सुशासन को बढ़ावा मिला है। विदेशी निवेशकों के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था के खुलने से विदेशी व्यापार और निवेश पर निर्भरता बढ़ी है। वैश्वीकरण के कारण लोकतांत्रिक मूल्यों और विचारों का प्रसार हुआ है। इससे भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में पारदर्शिता, जवाबदेही और सुशासन को बढ़ावा मिला है।

विश्व व्यापार संगठन (WTO) द्वारा निर्धारित सिद्धांतों और नियमों का पालन करने वाले देश वैश्वीकरण के एक समुदाय हैं। वैश्वीकरण ने देशों को अपनी अर्थव्यवस्था खोलने और विदेशी कंपनियों को इसमें निवेश करने की अनुमति दी। वैश्वीकरण का प्रभाव अक्सर न केवल अर्थव्यवस्था पर बल्कि देशों और उनके नागरिकों की संस्कृति, सामाजिक, राजनीतिक और सांप्रदायिक जीवन शैली पर भी देखा जाता है। वैश्वीकरण न केवल कंपनियों द्वारा पेश किए जाने वाले व्यवसाय और सेवाओं को प्रभावित करता है।

साहित्य समीक्षा

सिंह, जगदीप एट अल. (2022) [1]. भारतीय इतिहास के दौरान, महिलाओं को कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ा है जैसे सामाजिक दबाव, जाति के आधार पर भेदभाव और अन्य प्रकार की सामाजिक बाधाएँ जैसे उत्पादक संसाधनों तक सीमित पहुँच, गरीबी, उन्नति के सीमित अवसर, लाचारी और बहिष्कार, इत्यादि। दूसरी ओर, वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप महिलाओं के लिए कई तरह की नई परिस्थितियाँ सामने आई हैं, जिनका उनके जीवन के लगभग हर पहलू पर प्रभाव पड़ा है। इस अध्ययन में मीडिया की भूमिका, शिक्षा, सांस्कृतिक पहलुओं, राजनीति और महिलाओं की भूमिका, समाज में महिलाओं की भागीदारी और वैश्वीकरण के अन्य सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं के संदर्भ में महिलाओं के जीवन पर वैश्वीकरण के प्रभावों को समझने की कोशिश की गई है।

अंबू, सेइलान. (2020) [2]. भारतीय व्यापार और संस्कृति में वैश्वीकरण का प्रभाव। व्यापार का वैश्वीकरण एक व्यापार दर्शन है जिसमें किसी व्यक्ति के व्यापार को वैश्विक दृष्टिकोण से देखा जाता है, वैश्विक रूप से व्यवहार्य प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है, ऐसे उत्पादों या सेवाओं की पेशकश की जाती है जो वैश्विक वातावरण में ग्राहकों की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से संतुष्ट कर सकें, वैश्विक मानकों के अनुपालन में गुणवत्ता बनाए रखें, वैश्विक कॉर्पोरेट नागरिकता की पहचान बनाएँ और अंततः एक वैश्विक संगठनात्मक और व्यावसायिक संस्कृति को बढ़ावा दें।

हक, एम. (2018) [3]. कॉर्पोरेट वैश्वीकरण और भारत में महिलाओं पर इसका प्रभाव। क्या यह सच है, या कम से कम सैद्धांतिक रूप से संभव है, कि लोगों या राष्ट्र के जीवन में ऐसे समय आते हैं जब राजनीतिक माहौल की मांग होती है कि हम-यहां तक कि हममें से सबसे परिष्कृत लोग-खुले तौर पर पक्ष लें? मेरा मानना है कि ऐसे समय हमारे सामने हैं। और मेरा मानना है कि आने वाले वर्षों में, बुद्धिजीवियों और कलाकारों को पक्ष लेने के लिए बुलाया जाएगा, और इस बार, स्वतंत्रता के संघर्ष के विपरीत, हमारे पास 'उपनिवेशवादी दुश्मन' से लड़ने की विलासिता नहीं होगी। हम खुद से लड़ेंगे" (राय 198)।

गोंजालेज, बी. (2016) [4]. वैश्वीकरण: आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक मुद्दे। वैश्वीकरण, एक अंतरराष्ट्रीय घटना के रूप में, नई सहस्राब्दी में प्रमुख आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन के विकास में योगदान दिया है या सहायता की है। पिछली आधी सदी से, वैश्वीकरण की ताकतें विकासशील और विकसित दुनिया में तेजी से बढ़ रही हैं। जबकि वैश्वीकरण या दुनिया को एक साथ

बांधने वाले आर्थिक और सामाजिक संबंधों के महत्व को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है, विद्वान और नीति-निर्माता इस बात पर जोरदार असहमत हैं कि क्या वैश्वीकरण अपरिहार्य है

चटर्जी, मिनिया. (2012) [5]. दुनिया ने 2011 के वसंत में एक चौंकाने वाली घटना देखी। कई देशों के नागरिक राजनीतिक परिवर्तन के लिए अपनी सरकारों के साथ बातचीत शुरू करने के लिए समान तरीके से काम कर रहे थे। उन्होंने एक-दूसरे से बहुत तेजी से सीखा। उन्होंने इस बारे में एक नई समझ साझा की कि सत्ता को कैसे संगठित किया जाना चाहिए और राष्ट्रीय धन का उपयोग जनता की भलाई के लिए कैसे किया जाना चाहिए, जिससे एक नई राजनीतिक व्यवस्था सामने आई जो अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के पार तेजी से फैल गई। शहरों में यह घटना कहीं और इतनी स्पष्ट नहीं थी, जो आम तौर पर लोगों, धन और विचारों के सीमा-पार प्रवाह के केंद्र बिंदु होते हैं, और जो बाहरी प्रभावों के संपर्क में आने वाले नागरिकों के एक निश्चित वर्ग का पोषण करते हैं। यह प्रोफ़ाइल दर्शाती है कि वैश्वीकरण नागरिकों के लिए ऐसी स्थितियाँ स्थापित करने में मदद करता है

संस्कृति का समरूपीकरण बनाम वैश्वीकरण

एक केंद्रीय तर्क यह है कि सभी संस्कृतियाँ समान हो जाएँगी, यानी एकरूप हो जाएँगी। दूसरे लोग तर्क देते हैं कि संस्कृति के वैश्वीकरण की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वैश्वीकरण का अर्थ है वैश्विक को स्थानीय के साथ मिलाना। यह पूरी तरह से स्वतःस्फूर्त नहीं है। न ही यह वैश्वीकरण के व्यावसायिक हितों से पूरी तरह अलग है। यह एक ऐसी रणनीति है जिसे अक्सर विदेशी कंपनियाँ स्थानीय परंपराओं से निपटते समय अपनी बाज़ार क्षमता बढ़ाने के लिए अपनाती हैं। भारत में, हम पाते हैं कि स्टार, एमटीवी, चैनल वी और कार्टून नेटवर्क जैसे सभी विदेशी टेलीविज़न चैनल भारतीय भाषाओं का उपयोग करते हैं। यहाँ तक कि मैकडॉनल्ड भी भारत में केवल शाकाहारी और चिकन उत्पाद बेचता है, न कि उसके गोमांस उत्पाद, जो विदेशों में लोकप्रिय हैं। नवरात्रि उत्सव के दौरान मैकडॉनल्ड शाकाहारी हो जाता है। संगीत के क्षेत्र में, 'भांगड़ा पॉप', 'इंडी पॉप', फ्यूजन संगीत और यहाँ तक कि रीमिक्स की लोकप्रियता में वृद्धि देखी जा सकती है।

इससे जुड़ी एक और घटना है जिसे ग्लोबलाइजेशन के नाम से जाना जाता है जिसे रिट्जर (2004) ने गढ़ा है। यह उस चीज को संदर्भित करता है जिसे वह "विकास की अनिवार्यताएं कहते हैं जो संगठनों और राष्ट्रों को वैश्विक स्तर पर विस्तार करने और वहाँ के स्थानीय भूगोल पर खुद को थोपने के लिए प्रेरित करती हैं"। रिट्जर के लिए, वैश्वीकरण 'ग्लोकलाइजेशन' और 'ग्लोबलाइजेशन' का योग है।

भारत में महिलाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव

वैश्वीकरण अलग-अलग जगहों पर महिलाओं के अलग-अलग समूहों को अलग-अलग तरीकों से प्रभावित करता है। एक तरफ यह महिलाओं के लिए आर्थिक और सामाजिक प्रगति में अग्रणी बनने के नए अवसर पैदा कर सकता है, वहीं दूसरी तरफ यह असेंबली लाइन उत्पादन या आउटसोर्सिंग के रूप में सस्ते रास्ते उपलब्ध कराकर नौकरी के अवसरों को छीन सकता है।

वैश्विक संचार नेटवर्क और अंतर-सांस्कृतिक आदान-प्रदान के आगमन के साथ महिलाओं की स्थिति में बदलाव आता दिख रहा है, हालांकि यह बहुत बड़े पैमाने पर नहीं है। वैश्वीकरण ने वास्तव में महिलाओं के लिए समानता के विचारों और मानदंडों को बढ़ावा दिया है, जिससे जागरूकता आई है और समान अधिकारों और

अवसरों के लिए उनके संघर्ष में उत्प्रेरक का काम किया है। हालाँकि, वैश्वीकरण पितृसत्तात्मक समाज में लैंगिक असमानता को बढ़ा सकता है, खासकर विकासशील देशों में। आर्थिक क्षेत्र में यह अनौपचारिक श्रम क्षेत्र में महिलाओं के हाशिए पर जाने या आय के पारंपरिक स्रोतों के नुकसान के कारण गरीबी की ओर ले जा सकता है। महिलाओं के लिए संयुक्त राष्ट्र विकास कोष की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले दो दशकों में वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने देशों के भीतर और उनके बीच असमानता को बढ़ाने में योगदान दिया है।

महिलाओं पर वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव

- महिलाओं के लिए अवसरों में वृद्धि - व्यापक संचार लाइनें खोली गईं और अधिक कंपनियों के साथ-साथ विभिन्न विश्वव्यापी संगठनों को भारत में लाया गया - इससे महिलाओं के लिए अधिक अवसर उपलब्ध हुए, जो कार्यबल का बड़ा हिस्सा बन रही हैं
- स्वतंत्रता और आत्मविश्वास - महिलाओं के लिए नई नौकरियों के साथ, उच्च वेतन के अवसर हैं, जो आत्मविश्वास बढ़ाता है और स्वतंत्रता लाता है। इसके अलावा, बढ़ते शहरीकरण के कारण, शहरी क्षेत्रों में महिलाएँ अधिक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर हो गई हैं। यह अंतर-जातीय विवाह, एकल माताओं, लिव-इन रिलेशनशिप के माध्यम से प्रकट हुआ है।
- उद्यमशीलता के दृष्टिकोण का विकास - निम्न मध्यम वर्ग पारिवारिक संबंधों के तरीके में बदलाव का अनुभव कर रहा है। परंपरागत रूप से महिलाएँ घर पर रहकर घरेलू ज़रूरतों और बच्चों की देखभाल करती थीं। अब ज्यादातर महिलाएँ जीविकोपार्जन के लिए अपने निजी स्थानों से बाहर निकल रही हैं। उदाहरण के लिए: भारत में स्व-नियोजित महिला संघ (SEWA) उन महिला मज़दूरों का संघ है जो कड़ी मेहनत करने और मिलने वाले किसी भी काम के अवसर को भुनाने के लिए तैयार हैं।

महिलाओं पर वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव

- रोजगार और कार्यस्थल से जुड़े मुद्दे - हालाँकि महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं, लेकिन वे ज्यादातर कम वेतन वाली नौकरियों में ही व्यस्त हैं, उनकी सामाजिक सुरक्षा भी कम है। कार्यस्थल पर महिलाओं का शोषण एक नया मुद्दा बनकर उभरा है
- दोहरी जिम्मेदारी - महिलाओं को दो तरह से कष्ट उठाना पड़ रहा है। विकासशील देशों में महिलाएँ जैसे-जैसे कार्यबल में शामिल होती हैं, उनकी घरेलू जिम्मेदारियाँ कम नहीं होती हैं। महिलाएँ दो पूर्णकालिक नौकरियाँ करती हैं।
- महिलाओं का वस्तुकरण - वैश्वीकरण के साथ भारतीयों की पितृसत्तात्मक मानसिकता कायम रही है, जिसके कारण महिलाओं के लिए समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं, जैसे महिलाओं का वस्तुकरण, महिलाओं को परेशान करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग, महिलाओं के विरुद्ध हिंसा में वृद्धि।

भारत में युवाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव

वैश्वीकरण स्पष्ट आर्थिक अवसर और लाभ प्रदान करता है, लेकिन इसके साथ ही पर्याप्त सामाजिक लागत भी आती है, जो अक्सर युवा लोगों को असमान रूप से प्रभावित करती है, क्योंकि अनिश्चित और तेजी से विकसित हो रहे वैश्विक संदर्भ में उनकी स्थिति संक्रमणकालीन है।

भारत की अधिकांश आबादी युवा है। युवाओं के बीच जनसंख्या

वृद्धि वैश्वीकरण के प्रति भारत की प्रतिक्रिया के सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। भारतीय युवा वैश्वीकरण के प्रति सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह की धारणाओं को बढ़ावा दे रहे हैं। वे वैश्वीकरण को ऐसे तरीके से अपना रहे हैं जिसकी पिछली पीढ़ी ने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

युवाओं पर वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव

- शिक्षा और उद्यम: छोटे से छोटे गाँव से लेकर बड़े शहरों तक के युवा भारतीयों की प्राथमिक महत्वाकांक्षा "अमीर बनना" है। युवा लोग उद्यम और शिक्षा के माध्यम से इस लक्ष्य को प्राप्त करने की उम्मीद करते हैं। सिविल सेवा, इंजीनियरिंग और चिकित्सा जैसे सबसे उच्च प्रतिष्ठित करियर उच्च तकनीक और मीडिया में उच्च वेतन वाली नौकरियों के लिए रास्ता बना रहे हैं।
- वैश्विक किशोर बनना: भारत को प्रभावित करने वाली गतिशील, वैश्विक, आर्थिक शक्तियों के अलावा, वैश्वीकरण ने भारत की समृद्ध संस्कृति में भी बदलाव लाया है। युवा खुद को वैश्विक किशोरों के रूप में देखते हैं। वे जिस समुदाय में पैदा हुए हैं, उससे कहीं ज्यादा बड़े समुदाय से ताल्लुक रखते हैं। युवा पीढ़ी पश्चिमी लोकप्रिय संस्कृति को अपना रही है और इसे अपनी भारतीय पहचान में शामिल कर रही है। पश्चिमी और भारतीय मूल्यों का एक सूक्ष्म और शक्तिशाली संकरण हो रहा है - जो विशेष रूप से भारतीय युवाओं में स्पष्ट है।

युवाओं पर वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव

- शहरी गरीबी में वृद्धि: आर्थिक वैश्वीकरण के कारण शहरी गरीबी बढ़ी है क्योंकि लोग अवसर की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। शहरी प्रवासियों में युवा वर्ग की संख्या सबसे अधिक है। लेकिन शहरी केंद्रों में युवाओं को उच्च स्तर की बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। युवा प्रवासियों को शहरों में धकेला जाता है और खींचा जाता है, लेकिन उन्हें स्थानीय अर्थव्यवस्था में तनाव का सामना करना पड़ता है। महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे के अभाव में कई युवा दुर्लभ संसाधनों के कुप्रबंधन, भ्रष्टाचार और कभी-कभी प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित होते हैं जो अधिक आबादी वाले क्षेत्रों को तबाह कर देती हैं। धार्मिक, नागरिक और जातीय संघर्ष भी शहरों में उपलब्ध आर्थिक समृद्धि को कमजोर करते हैं, जिसमें अक्सर युवा लोग सीधे तौर पर शामिल होते हैं।
- उपभोक्तावादी रवैया: उपभोक्तावाद ने भारतीय लोगों की पारंपरिक मान्यताओं और प्रथाओं में घुसपैठ की है और उन्हें बदल दिया है। पारंपरिक भारतीय पोशाक में कमी आ रही है, खासकर शहरी युवाओं में, जो पश्चिम के नए फैशन के पक्ष में हैं। नवीनतम कारें, टीवी, इलेक्ट्रॉनिक गैजेट और फैशनेबल कपड़े खरीदना काफी लोकप्रिय हो गया है। युवा गरीब आबादी विशेष रूप से विज्ञापनों में देखे जाने वाले महंगे उत्पादों के आकर्षण के प्रति संवेदनशील है और जब वे इन विज्ञापनों पर प्रतिक्रिया नहीं दे पाते हैं, तो वे निराश हो जाते हैं।

अवसाद और आत्महत्या के मामलों में वृद्धि

वैश्वीकरण के कारण युवाओं में अनिश्चितता बढ़ी है; यह अंतर्निहित अस्थिरता उन तनावों और नियंत्रण की कमी को बढ़ा सकती है जो वे दैनिक आधार पर अनुभव करते हैं। अनिश्चितता पारंपरिक

मानदंडों के टूटने, परिवार और विवाह जैसे सामाजिक संबंधों के कमजोर होने, बाजार अर्थव्यवस्था के कारण करियर में अनिश्चितता के कारण है। इससे युवाओं में अवसाद और आत्महत्या के मामलों में वृद्धि हुई है। वैश्वीकरण के प्रभावों का मूल्यांकन मिश्रित रूप में किया जाता है, जो अच्छा और बुरा दोनों है। आर्थिक वैश्वीकरण ने अध्ययन और नौकरी के अवसरों में सुधार किया है और अधिक रोजगार के अवसर प्रदान किए हैं। लेकिन इसने गरीबों को और भी गरीब बना दिया है। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि वैश्वीकरण से पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं है। युवा आधुनिक, प्रगतिशील होने और समाज का हिस्सा बनने का अवसर पाकर खुश हैं।

परिवार पर वैश्वीकरण का प्रभाव

परंपरागत रूप से भारत में समाज की मूल इकाई व्यक्ति नहीं बल्कि संयुक्त परिवार हुआ करता था। स्वतंत्रता के बाद से भारतीय समाज में जीवन के हर क्षेत्र में बड़े बदलाव हुए हैं और हो रहे हैं। वैश्वीकरण के कारण परिवार धीरे-धीरे कमजोर होता जा रहा है और व्यक्तिवाद तेजी से बढ़ रहा है।

वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधान

वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएं ऐसे नेटवर्क हैं जो वस्तुओं और सेवाओं की सोर्सिंग और आपूर्ति के उद्देश्य से कई महाद्वीपों और देशों में फैले हो सकते हैं। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में दुनिया भर में सूचना, प्रक्रियाओं और संसाधनों का प्रवाह शामिल होता है। कम लागत वाले देश की सोर्सिंग वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं से जुड़ी होती है और इसका मतलब है कि उन देशों से उत्पादों और सेवाओं की खरीद करना जहां घरेलू देश की तुलना में कम श्रम दर और कम उत्पादन लागत है।

कोविड-19 संकट का उन निगमों और व्यवसायों पर विनाशकारी प्रभाव पड़ रहा है, जिन्हें सीमा पार आपूर्ति श्रृंखलाओं द्वारा समर्थित आर्थिक अंतर-निर्भरता से लाभ हुआ है। चीन दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादन आधार है और कई आपूर्ति श्रृंखलाओं के केंद्र में स्थित है। इस कोरोना वायरस के प्रकोप के बाद से, चीन पर निर्भर होने वाली कई कंपनियों को भारी नुकसान हुआ है। इसके अलावा, एक श्रृंखला उतनी ही मजबूत होती है जितनी सबसे कमजोर कड़ी। किसी भी स्तर पर कच्चे माल की खरीद, प्रसंस्करण, या पैकेजिंग में किसी भी बिंदु पर एक भी चूक मुख्य इकाई के पूरे उत्पादन को बाधित करती है। उदाहरण के लिए, भारत अपने सक्रिय फार्मा अवयवों का लगभग 70 प्रतिशत आयात करता है - जिसे चीन से थोक दवाओं के रूप में भी जाना जाता है, जिनकी आपूर्ति महामारी के दौरान बंद हो गई थी, और भारतीय फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्र सस्ती जेनेरिक दवाओं का उत्पादन करने में असमर्थ था, जबकि दुनिया भर में इसकी उच्च मांग थी।

कोविड-19 के संदर्भ में वैश्वीकरण

वैश्वीकरण राष्ट्रीय सीमाओं और संस्कृतियों के पार उत्पादों, प्रौद्योगिकी, सूचना और नौकरियों का प्रसार है। आर्थिक वैश्वीकरण में सीमाओं के पार वस्तुओं और सेवाओं का प्रवाह, अंतर्राष्ट्रीय पूंजी प्रवाह, टैरिफ और व्यापार बाधाओं में कमी, आप्रवासन और सीमाओं से परे प्रौद्योगिकी और ज्ञान का प्रसार शामिल है। इसके उद्भव के बाद से, कई अध्ययनों में घरेलू संसाधनों के प्रभावी आवंटन, प्रौद्योगिकी के प्रसार, कारक उत्पादकता में सुधार और पूंजी के संवर्द्धन के माध्यम से विकास पर वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव पाए गए हैं।

सामाजिक वैश्वीकरण पर COVID-19 महामारी के प्रभाव

कोविड-19 महामारी के फैलने के बाद सीमा बंद होना, सामाजिक दूरी और स्वास्थ्य संबंधी उपाय गंभीर रूप से अंतर्राष्ट्रीय और देश के बाहर प्रवास और पर्यटन को प्रतिबंधित कर दिया। उन्होंने यात्रा के जोखिमों और यात्रा की चिंता की धारणाओं को बढ़ा दिया। संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) के आंकड़े अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के लिए कोविड-19 महामारी के स्पष्ट प्रभावों को रेखांकित करते हैं। वैश्विक स्तर पर आगमन की संख्या 2019 में कुल 1465.5 मिलियन आगमन से घटकर 2020 में 405.2 मिलियन आगमन हो गई और 2021 में 426.9 मिलियन आगमन पर अपेक्षाकृत कम रही, जिसके बाद के वर्षों में इसमें सुधार हुआ। इस संदर्भ में, बिकले एट अल ने पाया कि अधिक वैश्विक देशों के मामले में यात्रा प्रतिबंध आम तौर पर अधिक स्पष्ट थे। विभिन्न राष्ट्रीयताओं और संस्कृतियों के बीच प्रत्यक्ष पारस्परिक संपर्क पर परिणामी सीमाओं ने सामाजिक वैश्वीकरण की सीमा को सीमित कर दिया है। मेजबान देशों में अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों और विदेशी श्रमिकों पर असंगत रूप से प्रभाव पड़ा है; इन स्थितियों ने स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक सेवाओं तक पहुंच को सीमित करके, नौकरी के नुकसान का कारण बनकर और अपने मूल देशों में लौटने की आवश्यकता के कारण उनके कल्याण को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है।

राजनीतिक वैश्वीकरण पर COVID-19 महामारी के प्रभाव

कोविड-19 महामारी ने शुरू में संरक्षणवादी उपायों, राष्ट्रवादी प्रवृत्तियों और विदेशी देशों के प्रति शत्रुता को बढ़ावा दिया, और इसने अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था और वैश्विक शासन के लिए चुनौतियां पेश की हैं। पारंपरिक वैश्विक राजनीतिक अंतर्क्रियाओं में बदलाव आया है, और शांति और सुरक्षा बनाए रखने और आर्थिक विकास और व्यापार खुलेपन को बढ़ावा देने में अंतर्राष्ट्रीय संगठनों (जैसे, विश्व व्यापार संगठन और संयुक्त राष्ट्र) की भूमिका को चुनौती दी गई है। लेवी [126] ने कहा कि वैश्विक शासन और बहुपक्षवाद को महामारी से पहले महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जो लोकलुभावनवाद के उदय और उदारवाद के लुप्त होने से उपजी हैं। कोविड-19 महामारी ने वैश्विक शासन और राजनीतिक वैश्वीकरण के पाठ्यक्रम को और भी अधिक विचलित कर दिया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने वैश्विक कोविड-19 संकट को कैसे प्रबंधित किया, इस बारे में आलोचकों की एक विस्तृत श्रृंखला रही है, जिससे सामान्य रूप से अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के बारे में और अधिक संदेह पैदा हुआ है। इस स्थिति के बीच, कई देशों (जैसे, यूरोपीय संघ और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संगठन [आसियान] के सदस्य देशों) ने महामारी संकट के प्रबंधन में क्षेत्रीय राजनीतिक और आर्थिक सहयोग पर भरोसा किया, जिससे संभावित रूप से विश्व अर्थव्यवस्थाओं और राजनीति में और अधिक क्षेत्रीयकरण की दिशा में एक मार्ग शुरू हुआ।

वैश्वीकरण के लिए COVID-19 महामारी के दीर्घकालिक निहितार्थ

वैश्वीकरण के पैटर्न और सरकारी प्रतिक्रियाएँ कोविड-19 महामारी के प्रकोप से पहले, वैश्वीकरण की लहरों में कमी के कुछ संकेत थे, जैसा कि राष्ट्रीय संरक्षणवादी नीतियों और सीमा नियंत्रणों के प्रचार, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार उदारीकरण योजनाओं में ठहराव, विदेशी पूंजी प्रवाह में वैश्विक कमी और राष्ट्रवाद और लोकलुभावन आंदोलनों में वृद्धि के माध्यम से व्यक्त किया गया था। कोविड-19 से पहले की

ये स्थितियाँ कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं के माध्यम से परिलक्षित हुईं, जैसे कि डोनाल्ड ट्रम्प का अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में चुनाव, यूरोपीय संघ से ब्रिटेन का बाहर निकलना (ब्रेक्सिट), और चीन और अमेरिका के बीच आर्थिक/राजनीतिक तनाव। ऐसा प्रतीत होता है कि कोविड-19 महामारी ने निरंतर/उभरते आर्थिक/राजनीतिक तनाव, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पुनर्गठन और राजनीति और नीतियों में राष्ट्रवाद/लोकलुभावनवाद की और खुराक के साथ इन पैटर्न को बढ़ावा दिया है। इसने स्वास्थ्य, राजनीतिक और आर्थिक उपायों के माध्यम से वैश्विक अर्थव्यवस्था को विभाजित करने में और योगदान दिया है, जिसका उद्देश्य शुरू में वायरस के प्रसार को सीमित करना और राजनीति और समाज में राष्ट्रवादी/लोकलुभावन प्रवृत्तियों के सामान्यीकरण के माध्यम से था। ये स्थितियाँ वैश्वीकरण के लिए दीर्घकालिक निहितार्थ दर्शाती हैं, और इस प्रकार, कोविड के बाद वैश्वीकरण का परिमाण संभवतः वैश्वीकरण के उस काल्पनिक स्तर से नीचे हो जाएगा जो महामारी की अनुपस्थिति में हुआ होता।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण ने भारतीय समाज को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है, इसकी संस्कृति, समाज, सरकार और अर्थव्यवस्था को बदल दिया है। इसने प्रौद्योगिकी, विशेष कौशल और एक बड़े उपभोक्ता बाजार तक पहुंच बढ़ाई है। इससे नौकरी के अवसरों में वृद्धि हुई है, कुल मिलाकर, वैश्वीकरण ने भारतीय समाज को बदल दिया है, इसकी संस्कृति, समाज, सरकार और अर्थव्यवस्था को बदल दिया है। वैश्विक संचार नेटवर्क और अंतर-सांस्कृतिक आदान-प्रदान के आगमन के साथ महिलाओं की स्थिति में बदलाव आता दिख रहा है, हालांकि यह बहुत बड़े पैमाने पर नहीं है। वैश्वीकरण के कारण लोकतांत्रिक मूल्यों और विचारों का प्रसार हुआ है। इससे भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में पारदर्शिता, जवाबदेही और सुशासन को बढ़ावा मिला है। शहरीकरण और वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप, भारतीय समाज में गहरा परिवर्तन हो रहा है। अर्थव्यवस्था की अंतर्निहित संरचना आर्थिक नीतियों से बहुत प्रभावित होती है।

संदर्भ

1. सिंह, जगदीप और कुमारी, डॉ. ममता। भारत में महिलाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव: एक महत्वपूर्ण समीक्षा। विज्ञान, संचार और प्रौद्योगिकी में उन्नत अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 2022. p. 127-137. 10.48175/IJARST-5937।
2. अंबू, सेइलन. भारतीय व्यापार और संस्कृति में वैश्वीकरण का प्रभाव. 2020.
3. हक, एम. कॉर्पोरेट वैश्वीकरण और भारत में महिलाओं पर इसका प्रभाव, 2018.
4. गोंजालेज, बी. वैश्वीकरण: आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक मुद्दे। 2016.
5. चटर्जी, मिनिया. राजनीति का वैश्वीकरण: मिस्र से भारत तक. सामाजिक आंदोलन अध्ययन. 2012;12:1-7. 10.1080/14742837.2012.698132.
6. वदित्य, वेंकटेश. भारत में वैश्वीकरण और उच्च शिक्षा: प्रतिमान बदलाव. 2019. 10.13140/RG.2.2.25552.76806.
7. शर्मा, शिव. भारतीय लोकतांत्रिक समाजवाद पर वैश्वीकरण और उदारीकरण का प्रभाव. जर्नल ऑफ ग्लोबल इकोनॉमी. 2019;15:189-201. 10.1956/jge.v15i3.592.
8. शॉटली, जीवन्ता और झा, हिमांशु. भारत में वैश्वीकरण और शासन, 2023. 10.4324/9781003152347.

9. गुप्ता, शिखा, कुमार, नंद. भारत में वैश्वीकरण के प्रभाव की गतिशीलता. प्रबंधकीय और निर्णय अर्थशास्त्र. 2021, 42. 10.1002/mde.3313.
10. चौक्रौने, लीला. वैश्वीकरण और भारतीय राजनीतिक आधुनिकता, 2020. 10.1007/978-3-030-44058-9_34.
11. इस्लाम, रबीउल और अहमद, फखरोराज़ी और हुसैन, हार्तिनी और रेहान, एमडी. वैश्वीकरण और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर इसका प्रभाव। मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान समीक्षाएँ. 2019;7:256-265. 10.18510/एचएसएसआर.2019.7130.
12. गोविंदराज, योगानंदम, करीम ए अब्दुल. भारत के विनिर्माण, आपूर्ति श्रृंखला स्थानीयकरण, बाजार की सफलता, कौशल अंतराल, क्षेत्रीय सीमा शुल्क, विनियामक आवश्यकताओं और राज्य कल्याण पर वैश्वीकरण का प्रभाव - एक व्यापक आर्थिक सैद्धांतिक मूल्यांकन, 2023.
13. बीसन, मार्क. वैश्वीकरण और शासन, 2017. 10.1057/978-1-137-58900-2_7.
14. मुखर्जी, राहुल. भारत और आर्थिक वैश्वीकरण, 2014. 10.1057/9781137356642_5.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.